❑रेखाचितराम

चामळ का घाट पे

अतुल कनक

लेखक परिचै

अतुल कनक रौ जलम 16 फरवरी, 1967 नै कोटा जिलै री रामगंज मंडी में होयौ। राजस्थानी रा चावा कवि, कथाकार, आलोचक अर उल्थाकार अतुल कनक री राजस्थानी में 'आओ बातां करां' (कविता-संग्रै), 'जूण जातरा' अर 'छेकड़लो रास' (उपन्यास) अर राजस्थानी भासा को मध्यकाल (आलोचना), हिन्दी में 'पूर्वा' (गीत-संग्रै), 'चलो चूना लगाएं' (व्यंग्य संग्रै) अर 'प्रेम में कभी-कभी' (प्रेम कवितावां) छप्योड़ी पोथ्यां। राजस्थानी अर हिंदी रै अलावा अंग्रेजी में ई लेखन। देस री नामी पत्र-पत्रिकावां में दस हजार सूं बेसी रचनावां छप्योड़ी। उपन्यास 'जूण जातरा' सारू साहित्य अकादेमी, दिल्ली रै राजस्थानी पुरस्कार समेत मोकळा इनाम-इकराम। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर अर वर्द्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा रै पाठ्यक्रम मांय रचनावां सामल। मंच रा ई चावा कवि। दूरदरसण सारू केई वृत्तचित्रां अर दो धारावाहिकां रौ लेखन। भासा, साहित्य, संस्कृति, कला, इतिहास, पुरातत्त्व अर लोकजीवण आपरी लेखकीय रुचि रा खास विसै। अबार कोटा में रैवै अर साहित्य लेखन रै साथै-साथै पत्रकारिता करै।

पाठ परिचै

'चामळ का घाट पे' अतुल कनक रौ लिख्योड़ौ भावपूर्ण रेखाचितराम है। बदळतै बखत में आपरै प्राकृतिक संसाधनां सारू लोगां री धारणावां अर आस्थावां ई बदळती जा रैयी है। अैड़ै बखत में लेखक चंबल नदी सारू आपरी आस्था प्रगट करी है। लेखक नदी रौ मानवीकरण करता थकां उणरी तुलना मां सूं करै अर बतावै कै आज री भाजानासी री जिंदगाणी में इण मां री बेकदरी होय रैयी है। लेखक साची कैवै— 'जीं कोई सूं कोय कारज न्हं सधतो दीखे, ऊं के कनै जाबा की फुरसत छै कुण के गौड़े?' इण रेखाचित्राम में लेखक रा दारसणिक भाव प्रगट होया है। हाड़ोती बोली रौ मीठास लियां औ रेखाचित्राम आपणी कुदरती चीजां सारू मिनखां रै मोहभंग माथै चिंता प्रगट करै।

चामळ का घाट पे

नरा दनां पाछै चामळ (चंबल नदी) का यां घाटां का दरसन कर्‌या। पिताजी याद आयग्या। बालपणां में वांकी आंगळी पकड़नै नरी बेर यां घाटां पे आयो छूं। घणां उछाह सूं वां मनैं ब्हैती धारा बीचै तिरबौ सिखायौ छौ। ऊं बगत तांई म्हारै गौड़े न्हं तो वांका उछाह अर उमाव के तांई प्हैचाणबा की सामरथ छी अर न्हं ही हूंस। पण अब जद खुद बाप बण्यौ छूं तौ समझ सकूं छूं के कोय बाप के तांई आपणी औलाद के तांई तिरबौ सिखाबा में कांई सुख मिळै छै। बाप सूं बधकर जगत का समदर में तिरबा की चोखी सीख दे भी कुण सकै छै? पिताजी घाट पे मनख्यान् सूं बतियाता होता, तौ भी म्हूं छपाक सूं नदी में कूद जातो। पिता को होबो ही म्हां के तांई सगळी चिंतावां अर सगळा डरप सूं कश्यां बचा ल्ये छै, यौ साच म्हूं पिताजी का रामसरण होयां पाछै जाण्यौ। घाट पे ऊबौ छौ तौ जाणै घाट ओळमौ दियौ, ''आज अेकलो कश्यां आग्यो भाया? पिताजी चिंता करेगा न!''

म्हूं समझूं छूं, घाट का म्हैड़ला की बात। यां की आंख्यां में तौ अबार भी वै ही चतराम छै— कै म्हूं छणीक-सी जेज आंख्यां सूं दूरै सरकतौ तौ पिताजी की आवाज नदी को काळज्यौ चीर देती, ''पम्मी, ओ पम्मी...'' अब न्हं वश्यां हेलौ पाड़बा हाळा पिताजी जगत में रया अर न्हं घाट पे वशी रौनक। लारला बरसां में चामळ का बंधा सूं होयनै कतनौ पाणी खड़ग्यौ, तोळ ही न्हं पड़ी।

देखतां ही देखतां जिनगाणी कतनी बदळगी ? कोई बगत छौ जद मनख या घाटां पे ही परभाती गाकर आपणा दन की सरुवात करै छौ। आज तो शहर तगात में नरा मोट्यार अश्या छै, ज्यांनै अबार तांई यां घाटां को मूंडौ ही न्हं ओळख्यौ होवैगौ। मनख्यां की जरूरतां बदळगी। जमारौ मुट्ठी में सिमटकर कांई आयौ, काळज्या भी जाणै सिकुड़ग्या। जीं कोई सूं कोय कारज न्हं सधतौ दीखे, ऊं के कनै जाबा की फुरसत छै कुण के गौड़े ? नदी तो नळ का पाइप में हो-होकर घर-घर तांई पूगगी, अब नदी तांई पूगबा की गरज कुण के छै ? फेर, जद नदी आप आपणां अस्तित्त बेई मोटी लड़ाई लड़ती होवै तौ यां घाटां को महत्त तो नदी सूं ही छै। गंगा होवै कै चामळ, म्हंई लागै छै कै वां कै सिराणै ऊब्या घाट म्हां मनख्यां का माजणां ईं देखकर अतनी जोर सूं कचकची खाता होवैगा कै वांका डील में ही ठांव-ठांव पे जखम पड़ग्या।

नद्यां कोय का सुख में पांती न्हं पाड़ै, लगौलग पुन्न की पांती बांचै छै। पण ईं दौर में वांका नीर ईं भी लीर-लीर करबा हाळी राजनीति तौ पुन्न की पूण्यूं पे राहू बणकर ग्रहण लगा र्‌ही छै। लोग नद्यां पे भी हक जता रया छै। नद्यां के तांई आपणी मूठी में बांध लेबा को सुपनो सजाबा हाळा यां मनख्यां सूं कोय पूछै कै नद्यां तौ सबकी महतारी छै अर महतारी की ममता पे कोय अेक ही बेटा को अधिकार न्हँ होवै। पॅण या बात वे लोग न्हँ समझ सकै छै, ज्यांनै घाटां सूं लिपटकर ब्हैती नदी को बहाव न्हं देख्यो होवै।

बालपणां में ज्यां घाटां पे मनख्यां को मजमौ देखै छौ, अब वां ही घाटां पे सरणाटो पसर्‌यौ छौ। घाट पे अेक आड़ी थरप्या शिवलिंग (शिवजी की पिंडी) ईं देखकर लाग्यौ, मानौ कोई बूढाकर हरिनाम जपकर मनखजूण का तमाशा ओळख र्‌यौ छै। जश्यां कोय भर्‌या-पूरा घर में अेकलौ बूढाकर हाउजी, किटी पार्टी, कंप्यूटर जश्यां कौतुकां सूं परै जाकर आपणी कोठरी में ईं आस सूं सुमरनी का मनक्या फैरतो र्‌हे छै कै कोय तौ मनक्यौ मौत की मंसा पूरेगौ। पण कांई नदी अर ऊं का घाट भी अतना परबस अर बूढा हौ सकै छै ? जीं दन नद्यां मौत मांगणी सरू कर दी, ऊं दन मनख जमारौ कांई करेगौ ?

... और की कांई क्हूं, म्हारा बालपण की तो नरी यादां यां घाटां सूं गूंथी होई छी, पण म्हूं आप भी तो बरसां पाछै चामळ का ईं तीर पे आयौ छूं। आयौ कांई छूं, आणौ पड़्यौ। म्हां लोग यां दनां नदी तीरै जावां ही कद छां ? जद कोय रामसरण हौ ज्यावै छै तौ मसाणां सूं बावड़ती बगतां शुद्धि को लालच म्हां के तांई घाट की आड़ी धकेल दयै छै। मसाणी माटी का अपसगुन सूं मुगती को लालच न्हं होतो तौ आज भी कुण जातौ घाट पे ? अब तौ नरा मनख ईं रीत की भी काट खाड़ ल्यै छै। नळ के पींदै बैठ जाबा सूं ही जे कारज सध जाता होवै तौ फेर नदी का घाट की पैढ्यां कुण उतरै ?

जे चीज काम में न्हं आवै, वा हवळै-हवळै आपणौ महत्त खो दयै छै। घाट तौ अब आपणौ रूप भी खोबा लागग्या। उठी पड़्या कूड़ के तांई ओळखकर घिन आबा लागी। कदी ये ही घाट मुळकै छा अर मुळकावै छा। आप आपणां हाल पे अर जमारा का बरताव पे खून का आंसू ओसरता दीखै छै। म्हंई बालपणां में हेत लड़ाबा हाळौ घाट गंदगी सूं आंथड़ र्‌यौ छौ। नदी कशी साता में छी ? ऊं में भी मनख कूड़ पटक र्‌या छा। मानता क्हैवै छै कै पाणी में कूड़ पटक्यां सूं पाप बदै छै। म्हनै सोची कै बालपणा की ओळूं दोन्यूं हाथां सूं अंगेज ल्यूं। ईं के बेई घाट सूं कूड़ हटाबौ भी जरूरी छौ। पण जद सगळौ शहर नदी में कूड़ पटककर पाप कमा र्‌यौ होवै तौ म्हूं ढोबौ भर पुन्न करके भी कश्या कारज साध लूंगौ ?

म्हूं सोच में डूब्यौ थकौ छौ, म्हारै लारै आया मनख चाल पड़्या। म्हंई सोच में डूब्यौ देख अेक बेली नैं सुझाव दियौ, ''आप मूंडा अर माथा पे आलौ हाथ फेरल्यौ भाई साहब! फेर घरां जाकर नहा लीजौ।'' ऊ समझ्यौ कै म्हूं गंदळा पाणी में उतरबा सूं डरप रयौ छूं। म्हूं ऊं के तांई कांई समझातौ? म्हूं या बात भी जाणै छौ कै उठी रुकबा की थरता कोय में कोय न्हं। म्हूं भी भीड़ के सागै आगै बदग्यौ।

घाट सूं ऊपरै चढता सतां म्हंई लाग्यौ जाणै कोय आवाज छै, जे क्है र्‌ही छै, ''फेर आइजै बेटा! थारी ओळूं सतावै छै अर थासूं दो बोल बोलबा को मन करै छै।'' म्हारै तांई उपेक्षा अर अेकलोपण झेलती वा जामण याद आगी, जीं नै घणां उमाव सूं अेक मकान बणायौ छौ, पण मोट्यार होतां ही पेट का जाया बेटां नै अेक अेक करके सगळा कमरा पे कब्जो कर ल्यौ अर अब डोकरी की खाट पैढ्यां के सौढै बणी अेक छोटी-सी कोठरी में बिछी छै। खाट घर सूं बारै भी जा सकै छी, पण अब मां की पेंसन सूं नरा कारज सध जाबा को लालच मां को महत्त अतनौ भी न्हं नकारबा दयै।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

नरा=खासा। दनां=दिनां। चामळ=चम्बल। नरी बेर=खासा देर। उछाह=उत्साह। उमाव=चाव। गौड़े=कनै। हूंस=इच्छा। मनख्या=मिनखां। रामसरण=निधन। म्हैड़ला=मन। खड़ग्यौ=निकळग्यौ। तोल=अंदाजौ। ओळख्यौ=पिछाण्यौ। सधतौ=सिध होवतौ। माजणां=औकात। महतारी=माता। ईं=नै। आड़ी=कानी। तीर=किनारौ, कांठौ। मसाणां=समसाणां। हवळै-हवळै=धीरै-धीरै। कूड़=कूटळौ। ओसरता=बैवणा सरू होवता। म्हंई=म्हनैं। आंथड़ रयौ=भर्‌योड़ौ। साता=चैन। ढोबौ=धोबौ। थरता=धीरज। सतां=थकां। ओळूं=याद। जामण=माता। पैढ्यां=देहरी, थळी। सौढै=नजदीक।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. बाळपणै में लेखक नैं चामळ रा घाट माथै कुण ले जावता हा?

(अ) पिताजी (ब) दादोसा

(स) नानोसा (द) काकोसा

( )

2. रेखाचितरामकार 'नदी' नैं किणसूं बेसी मानी है?

(अ) बैन सूं (ब) नवी बीनणी सूं

(स) मां सूं (द) भुवा सूं

( )

3. चामळ रा घाट माथै कांई बदळाव देखनै लेखक दुखी है?

(अ) पाणी कम होवण सूं (ब) सरणाटौ पसरण सूं

(स) घाट टूट-फूट जावण सूं (द) मिनखां रौ मेळौ मंडण सूं

( )

4. घाट सूं पाछौ ऊंची चढती बगत लेखक नैं कांई आवाज सुणण रौ लखाव होवै ?

(अ) लोगां नैं अठै मत आण दीजै ! (ब) अब कदैई मत आइजै !

(स) जोड़ायत नैं सागै लाइजै ! (द) फेर आइजै, बेटा !

( )

साव छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. अतुल कनक नैं साहित्य अकादेमी पुरस्कार कुणसी पोथी माथै मिल्यौ ?
2. इण रेखाचितराम मांय राजस्थानी भासा री कुणसी बोली रौ मीठास है ?
3. लेखक नैं तिरणौ कुण सिखायौ ?
4. लेखक रौ बाळपणै में नांव कांई हो ?
5. 'माता' सबद रा दोय पर्याय बतावौ, जिका इण पाठ में आया है।

छोटै पडूत्तर वाळा सवाल

1. अतुल कनक री राजस्थानी पोथ्यां रा नांव लिखौ।
2. अतुल कनक री लेखकीय रुचि रा खेत्र कुण-कुणसा है।
3. पिताजी घाट माथै मिनखां सूं बतळावता तद लेखक कांई कर जावतौ ?
4. रेखाचितराम 'चामळ का घाट पे' मुजब पैली लोग दिन री सरुआत किण भांत करता ?
5. ''बाप सूं बधकर जगत का समदर में तिरबा की चोखी सीख दे भी कुण सकै छै ?'' ओळी रौ म्यानौ द्यौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'चामळ का घाट पे' रेखाचितराम री मूळ संवेदना विगतवार बतावौ।
2. इण रेखाचितराम में लेखक नदी रौ मानवीकरण किण भांत कर्‌यौ है ? खुलासौ करौ।
3. इण रेखाचितराम रै आधार माथै खुलासौ करौ कै आज कुदरती चीजां सारू मिनखां रौ मोहभंग होवतौ जाय रैयौ है ?
4. इण रेखाचितराम रै आधार माथै अतुल कनक री भासा-सैली अर लेखन-कला विस्तार सूं समझावौ।
5. ''रेखाचितराम 'चामळ का घाट पे' में लेखक अतुल कनक रा दारसणिक भाव प्रगट होया है।'' खुलासौ करौ।

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. नरा दनां पाछै चामळ (चंबल नदी) का यां घाटां का दरसन कर्‌या। पिताजी याद आयग्या। बालपणां में वांकी आंगळी पकड़नै नरी बेर यां घाटां पे आयो छूं। घणां उछाह सूं वां मनैं ब्हैती धारा बीचै तिरबौ सिखायौ छौ। ऊं बगत तांई म्हारै गौड़े न्हं तो वांका उछाह अर उमाव के तांई प्हैचाणबा की सामरथ छी अर न्हं ही हूंस।

2. बालपणां में ज्यां घाटां पे मनख्यां को मजमौ देखै छौ, अब वां ही घाटां पे सरणाटो पसर्‌यौ छौ। घाट पे अेक आड़ी थरप्या शिवलिंग (शिवजी की पिंडी) ईं देखकर लाग्यौ, मानौ कोई बूढाकर हरिनाम जपकर मनखजूण का तमाशा ओळख र्‌यौ छै।

3. जे चीज काम में न्हं आवै, वा हवळै-हवळै आपणौ महत्त खो द्यै छै। घाट तौ अब आपणौ रूप भी खोबा लागग्या। उठी पड़्या कूड़ के तांई ओळखकर घिन आबा लागी। कदी ये ही घाट मुळकै छा अर मुळकावै छा। आप आपणां हाल पे अर जमारा का बरताव पे खून का आंसू ओसरता दीखै छै।